कर्तव्य

अशोक मानव

गति तेज है। सकारात्मक नहीं नकारात्मक। जरा सोचिए आप क्या है? आप कहाँ खड़े हैं? आप क्या कर रहे हैं? इसका योगदान आपके भविष्य में है? क्या दूसरे के करने का फल आपको मिलता है। क्यों नहीं? पेड़ कोई लगाता है, फल कोई खाता है। मैं उस वृक्ष की बात नहीं कर रहा हूँ जिसे लगाने वाला फल नहीं खाता। मैं उस कर्तव्य रूपी वृक्ष की बात कर रहा हूँ जिसे व्यक्ति स्वयं लगाता है और उस फल को स्वयं खाता है। पर वृक्ष का लाभ सभी को मिलता है, वह स्वयं को मीठा लगता है और दूसरे को आनन्द देता है। इस समय प्रकृति मानव समाज से पुकार करके कह रही है कि कर्तव्य रूपी वृक्ष का रोपण कर दो। इस वृक्ष का रोपण सत्य रूपी भावना द्वारा ही किया जा सकता है जो अपनी भावना में सत्य विचार लाता है। और कर्तव्य को व्यवहारिक जीवन में करता है। व्यक्ति द्वारा किए हुए हर क्रिया का प्रभाव पड़ता है कर्तव्य रूपी वृक्ष से अधिकर रूपी फल अपने आप मिल जाता है जिस व्यक्ति से यह कहा जाता है कि तुम ईमानदार अच्छे बनो तो वह कहता है कि हम अकेले बन कर क्या करेंगे, पूरा समाज ऐसे ही हो या है। बात यहाँ पर सिर्फ एक व्यक्ति की है।। शुरूआत इकाई से होती है दि समूह से दूर करना है तो शुरूआत इकाई से ही होगी। यदि यही भावना अधिकांश व्यक्ति में आ जाये तो दूसरे से कहने की जरूरत क्या? इस वृक्ष को उखाड़ने वाले भी कुछ हो सकते हैं पर वे इतनी कम मात्रा में होंगे जो सत्य का सामना नहीं कर पायेंगे। हमारी समस्या का समाधान सिर्फ कर्तवय से हो सकता है कर्तव्य को अच्छी तरह समझ सकें इसीलिए मैं कर्तव्य रूपी वृक्ष को लगाने को चल रहा हूँ। आप सब भी अपने हाथ बढ़ाकर इस वृक्ष को बढ़ाने में सहयोग दें। आप सबकी शुभकामनाओं के साथ।

सत्य को जानने की प्रबल इच्छा होनी चाहिए

अशोक मानव

सही मोक्ष वह है जो इसी संसार में रहते हुए सत्य को पहचान ले और प्रकृति में समभाव से मिल जाए। ऐसा होने पर फिर जब उस शरीर से शुद्ध भावना छोड़ी जाती है, वह कभी नष्ट नहीं होती है।

इस शरीर को छोड़ने के बाद भी उस सत्यनिष्ठ व्यक्ति के विचार इसी भाव के अन्य व्यक्ति में समा जाते हैं। देखा जाए तो वास्तविक मोक्ष तो यही है। माया, जिसको हर व्यक्ति मोक्ष प्राप्ति में बंधन मानता है वही माया हर व्यक्ति के लिए आवश्यक होती है। आवश्यकता है माया की संकीर्णता से बचने की, माया से बचने की जरूरत नहीं है। मानव में सत्य को जानने की प्रबल इच्छाशक्ति होनी चाहिए।

आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान जब मिलता है तो समग्रता आ जाता है। हर व्यक्ति की प्रकृति जब प्रकृति में मिल जाती है तो हर ईश्वर एक समान बन जाता हैं मन जब एक बिन्दु पर रुक जाता है, तो हर समस्या का निदान मिल जाता है, सोई मानवता जब जग जाती है तो हर दर्शन बदल जाता है।